

व्यवसायापासून ते संशोधनापर्यंत ठसा

आपल्या पारंपरिक मूल्यांची जोपासना करत डॉ. सुनंदा नवले यांनी उत्तुंग यशस्वी कामगिरी करून दाखविली आहे. याचे मूर्तिरूप उदाहरण म्हणजे सिंहगड संस्था. स्वप्रांच्या मागे लागणे आणि ती स्वप्ने प्रत्यक्षात आणणे यासाठी कष्ट करण्याचे बाळकडू यांना मिळाले, याच अंतःप्रेरणेतून यांनी एमपीएम आणि पीएच.डी. या पदव्या संपादन केल्या. स्वतःचे निर्णय स्वतंत्रपणे घेण्याची मानसिकता, वेगळ्या वाटेवरून चालण्याची विलक्षण क्षमता, सचोटी, नावीन्याची आस आणि स्वयंशिस्त अशा उत्तमोत्तम गुणांचा मिलाफ असल्याने सिंहगड टेक्निकल एज्युकेशन सोसायटीच्या सचिवपदी त्या सक्षमपणे कार्यरत आहेत.



डॉ. सुनंदा नवले,
संस्थापक सचिव, एसटीईएस

संस्थेमध्ये यांच्या मार्गदर्शनानुसार 'सिंहगड करंडक', 'निऑन स्पेक्ट्रम' व विविध प्रकारच्या क्रीडा स्पर्धा यांचे प्रतिसाल आयोजन केले जाते.

पुणे येथे सुरुवात झालेल्या 'सिंहगड टेक्निकल एज्युकेशन सोसायटी' या संस्थेचा बारा शाखांमध्ये विस्तार झाला आहे, ज्या पुण्याबाहेरही कार्यशील आहेत, यात ८५००० हून अधिक विद्यार्थी शिक्षण घेतात तसेच ८००० हून अधिक कर्मचारी वर्ग आहे. संस्थेच्या संस्थापक सचिव म्हणून

संवेदनशील होता, रोगाबद्दलची अपुरी माहिती असल्याने सामान्य लोकांमध्ये भीतीचे सावट होते. या आजारात रुग्णांचे विलगीकरण होणे आवश्यक होते. ते लक्षात घेऊन सिंहगड इन्स्टिट्यूट कोरोनाच्या महामारीमध्ये एकूण १० वसतिगृहे दिली होती. रुग्णांचे मानसिक संतुलन टिकून राहण्यासाठी येथील स्वच्छ व सुंदर नैसर्गिक परिसर जणू वरदान ठरला. "A Home away from Home" अशीच भावना रुग्णांमध्ये होती.

आत्मविश्वासाने ध्येयाकडे वाटचाल करा

'सिंहगड'च्या डॉ. सुनंदा नवले यांचे महिलांना आवाहन



पुणे, ता.

७ : प्रत्येक स्त्री ने स्त्रीत्वाचे भान ठेवून, आंतरिक शक्ती ओळखून सृजनशीलतेकडे

वाटचाल करावी, हाती घेतलेले काम तडीस न्यावे. अपयशासही निर्भयपणे तोंड द्यावे, कामाचे योग्य नियोजन करावे. स्वतःतील गुण जाणून कौशल्य आत्मसात करावे, कणखरपणा व प्रेमळपणा यांची सांगड घालावी. आत्मविश्वासाने ध्येयाकडे वाटचाल करावी, त्यासाठी कष्टांची तमा बाळगू नये, असे प्रतिपादन सिंहगड टेक्निकल एज्युकेशन सोसायटीच्या सचिव डॉ. सुनंदा नवले यांनी जागतिक महिला दिनाच्या निमित्ताने केले.

नावीन्य, विविधता आणि दूरदृष्टी हा आमच्या यशाचा मूलमंत्र आहे, असे सांगत डॉ. नवले म्हणाल्या, "एकविसाव्या शतकातील स्त्री ही सर्वक्षेत्रांमध्ये प्रगतिपथावर वाटचाल करत आहे. याचे मूर्तीरूप उदाहरण म्हणजे सिंहगड संस्था. स्वप्नांच्या मागे लागणे, ती स्वप्न

सामाजिक बांधिलकीतून रुग्णसेवा

श्रीमती काशीबाई नवले रुग्णालयात विविध रोगांवर मोफत उपचार होतात. सामाजिक बांधिलकी जपत येथील १० वसतिगृहांत कोविड सेंटर्स केले. येथील कर्मचारी वर्ग स्वच्छता, निर्जंतुकीकरण व रुग्णांसाठी सुविधा यासाठी सदैव जागरूक आहेत. रुग्णास कधीही एकटेपणाची जाणीव होऊ नये, यासाठी प्रयत्न केला गेला. अतिदक्षता विभागातील रुग्णांसाठी येथील डॉक्टर्स, परिचारिका आणि सेवक वर्ग अहोरात्र मेहनत करत होता, याचे फलित म्हणून अनेक रुग्ण यातून बरे झाले, असेही डॉ. नवले यांनी स्पष्ट केले.

प्रत्यक्षात आणणे यासाठी कष्ट करण्याचे बाळकडू मिळाले, याच अंतः प्रेरणेतून एम. पी. एम. आणि पीएच. डी. या पदव्या संपादन केल्या."

स्वतंत्रपणे निर्णय घेण्याची मानसिकता, वेगळ्या वाटेवरून चालण्याची क्षमता, सचोटी, नावीन्याची आस आणि स्वयंशिस्त अशा गुणांचा मिलाप असल्याने सिंहगड टेक्निकल एज्युकेशन सोसायटीचे सचिवपद सक्षमरित्या सांभाळता आले. उपलब्ध शैक्षणिक संसाधने आणि गुणात्मक शिक्षण हे परस्परश्री निगडित आहेत, याचे

महत्त्व लक्षात घेऊन सिंहगड ही संस्था शैक्षणिक क्षेत्रात गुणात्मक बदल घडवून आणण्यास कटिबद्ध आहे, असेही त्यांनी सांगितले.

"सिंहगड टेक्निकल एज्युकेशन सोसायटी" या संस्थेचा बारा शाखांमध्ये विस्तार झाला आहे, ज्या पुण्याबाहेरही कार्यशील आहेत. यात ८५०००हून अधिक विद्यार्थी शिक्षण घेतात तसेच ८००० हून अधिक कर्मचारी वर्ग आहे. संस्थेत "सिंहगड करंडक", "निऑन स्पेक्ट्रम" व विविध प्रकारच्या क्रीडा स्पर्धांचे दरवर्षी आयोजन केले जाते.

नवभारत

महिला प्रेरणास्रोत

शिक्षा के क्षेत्र में सफलता के शिखर तक का सफर पूरा किया

दूरदृष्टि से परिपूर्ण व्यक्तित्व डॉ. सुनंदा नवले

नवभारत न्यूज नेटवर्क

पुणे. 21 वीं सदी की महिलाएं सभी क्षेत्रों में प्रगति करते हुए आगे बढ़ रही हैं. व्यावसायिक क्षेत्र से लेकर अनुसंधान के क्षेत्र तक महिलाओं ने अपने अस्तित्व को साबित कर दिखाया है. आज विश्व में कोई ऐसा क्षेत्र नहीं है, जहां पर महिलाओं ने अपनी छाप नहीं छोड़ी हो. अपने पारंपरिक मूल्यों को संजोते हुए शिक्षा जैसे अहम क्षेत्र में अपनी अलग पहचान स्थापित करने वाला व्यक्तित्व है डॉ. सुनंदा नवले का. उन्हीं के सानिध्य में शिक्षा के क्षेत्र में सिंहगढ़ शिक्षा संस्थान ने आज सफलता के शिखर तक का सफर पूरा किया है. ऐसे व्यक्तित्व बारे में जानकारी देना 8 मार्च के विश्व महिला दिवस के मौके पर किया गया यह छोटासा प्रयास...



सामाजिकता जिम्मेदारी का रखती है ख्याल

शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत रहते हुए जीवनावश्यक कौशल, व्यावसायिक और सकारात्मक दृष्टिकोण रखने में डॉ. सुनंदा नवले अवलत तो है ही. लेकिन यह सब करते हुए वह सामाजिक कार्यों में भी हमेशा अग्रसर रहती है. उनके इसी दृष्टिकोण के चलते सिंहगढ़ के शिक्षा संस्थान भी अपनी सामाजिक जिम्मेदारी को समझते हुए दिन-ब-दिन सफलता की बुलंदियों को छूने के लिए वह हमेशा प्रयासरत रहती है. उपलब्ध शिक्षा संसाधनों के माध्यम से क्वालिटी एजुकेशन दिलाने पर डॉ. सुनंदा नवले फोकस रखती हैं. इसे ध्यान में रखते हुए यह संस्थान शिक्षा क्षेत्र में आमूलचूल परिवर्तन लाने के लिए प्रतिबद्ध है. बेहतर शिक्षा का लक्ष्य लेकर यह संस्था कार्यरत है. विश्व के विकसित देशों के साथ संपर्क करने के लिए छात्रों के स्वीगींग विकास पर ध्यान केंद्रित करते हुए उनमें बौद्धिक, भावनिक और सामाजिक जागृति का प्रयास किया जाता है. इसके लिए संस्था में डॉ. सुनंदा नवले के मार्गदर्शन में 'सिंहगढ़ क्लब', 'निऑन रॉबोट्रम' जैसे विभिन्न उपक्रम चलाए जाते हैं.

कोरोना महामारी में जारी रहा कार्य



वर्ष 2020 में पूरे विश्व में कोरोना महामारी ने काफी हाहाकार मचाया. इस प्रतिकूल परिस्थिति में भी समाज की जरूरत को ध्यान में रखते हुए 'सिंहगढ़' संस्थानों के 10 छात्रावासों को कोविड सेंटरों में तब्दील किया गया. इन सभी कोविड सेंटरों उच्च चिकित्सा सुविधाओं के साथ-साथ कोरोना योद्धा डॉक्टरों और नर्सों उपलब्ध कराई गईं. इन सभी ने मिलकर कोरोना के खिलाफ चले रही जंग में काफी बेहतरीन कार्य किया और इस आपदा को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की. इसके अलावा कोरोना महामारी के संदर्भ में लोगों में एक भय का माहौल बन गया था. ऐसे में आइसोलेशन में जो मरीज थे उन्हें तथा उनके परिजनों को मानसिक धैर्य दिलाने का कार्य यहां किया गया. इसके अलावा कश्मीरबाई नवले हॉस्पिटल में भी कोरोना के मरीजों के लिए एक स्वतंत्र विभाग शुरू कर वहां पर कोरोना मरीजों पर इलाज कराने के लिए आईसीयू समेत सभी तरह की अत्याधुनिक स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराई गईं. यहां पर बड़ी संख्या में मरीजों को कोरोना से मुक्त कराते हुए उन्हें स्वस्थ जीवन दिलाया गया. इस पूरे कार्य को प्रा. एम. एन. नवले सर के मार्गदर्शन में डॉ. सुनंदा नवले ने अंजाम दिया.

कड़ी मेहनत और कार्य के प्रति निष्ठा

सपने देखना और उन सपनों को पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत और निष्ठा यह डॉ. सुनंदा नवले के व्यक्तित्व के विशेष पहलू हैं. परिवार से मिली प्रेरणा और प्रोत्साहन के चलते ही उन्होंने पीएम्पी की डिग्री और पीएचडी प्राप्त की. अपने फैसले खुद लेने की मानसिकता, अपने रास्ते खुद चुनने की विलक्षण क्षमता, ईमानदारी, नवी-मोषिता का लक्ष्य और स्वयंअनुशासन ऐसे स्वर्णिम गुणों का उनमें मिलाप दिखाई देता है. यही कारण है कि सिंहगढ़ शिक्षा संस्थान के संस्थापक प्रा. एम. एन. नवले के नेतृत्व में डॉ. सुनंदा नवले कुशलता और सक्षमता से 'सिंहगढ़' के सचिव पद का निर्वाह कर रही हैं.

'सिंहगढ़' का सर्वोच्च विस्तार

पुणे में स्थापित 'सिंहगढ़ टैक्निकल एजुकेशन सोसाइटी' डॉ. सुनंदा नवले अपने काम के प्रति जितनी निष्ठा रखती है, उतनी ही शिद्धत से वह इस संस्था का कुल बारह शाखाओं में विस्तार हुआ है. जर्जरतमंदों को मदद दिलाने में भी सक्रिय भूमिका निभाती है. 'श्रीमती कश्मीरबाई नवले हॉस्पिटल' में विभिन्न बीमारियों पर जरूरतमंद लोगों को इलाज दिलाने के संदर्भ में वह हमेशा जागरूक रहती है. इसके लिए नियमित तौर पर रक्तदान शिबिर, स्वास्थ्य कार्यक्रमों पर उनके मार्गदर्शन में अमल किया जाता है.

जरूरतमंदों की मदद के लिए पहल

डॉ. सुनंदा नवले 'सिंहगढ़' के सभी कर्मचारियों के प्रति काफी तत्पर रहती हैं. कर्मचारियों को यातायात और निवास की उचित सुविधाएं, उनके बच्चों के लिए बेहतर शिक्षा और उन्हें अच्छा वातावरण देने के लिए यह तत्पर रहती हैं. डॉ. सुनंदा नवले अपने परिवार समेत 'सिंहगढ़' के सभी शिक्षा संस्थानों की जिम्मेदारी निभाते हुए अपने कार्य के प्रति सक्रिय बनी हुई हैं. यही कारण है उनका व्यक्तित्व सभी के लिए आदर्श साबित हो रहा है. आज के महिला दिवस के मौके पर उनके इस बेहतरीन कार्य को सलाम करवा वार्डों में नारी शक्ति का सम्मान करने जैसा होगा.

महिला दिन विशेष

कर्मचारियों के प्रति तत्पर

डॉ. सुनंदा नवले 'सिंहगढ़' के सभी कर्मचारियों के प्रति काफी तत्पर रहती हैं. कर्मचारियों को यातायात और निवास की उचित सुविधाएं, उनके बच्चों के लिए बेहतर शिक्षा और उन्हें अच्छा वातावरण देने के लिए यह तत्पर रहती हैं. डॉ. सुनंदा नवले अपने परिवार समेत 'सिंहगढ़' के सभी शिक्षा संस्थानों की जिम्मेदारी निभाते हुए अपने कार्य के प्रति सक्रिय बनी हुई हैं. यही कारण है उनका व्यक्तित्व सभी के लिए आदर्श साबित हो रहा है. आज के महिला दिवस के मौके पर उनके इस बेहतरीन कार्य को सलाम करवा वार्डों में नारी शक्ति का सम्मान करने जैसा होगा.